राष्ट्रीय चेतना के हास्य-व्यंग्य कवि

डॉ. परमेश्वर गोयल उर्फ काका बिहारी

प्रधान संपादक

डॉ. शिवनारायण

संपादक

डॉ. नीलू अग्रवाल

राष्ट्रीय चेतना के हास्य-व्यंग्य कवि

डॉ. परमेश्वर गोयल उर्फ काका बिहारी

(आलोचना)

प्रधान संपादक

डॉ. शिवनारायण

●

संपादक

डॉ. नीलू अग्रवाल

अयन प्रकाशन, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

ISBN: 978-93-94221-04-8

अयन प्रकाशन
जे-19/39, राजापुरी, उत्तम नगर,
नई दिल्ली-110059
मोबाइल : 9211312372
e-mail : ayanprakashan@gmail.com
website : www.ayanprakashan.com

© : सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 2022
मूल्य : 500.00 रुपये
टाइपसेटिंग : अभिषेक, ए.के. एंटरप्राइजेज, पटना-20
मुद्रक : एस. पी. कौशिक एंटरप्राइज़ेज़, शाहदरा, दिल्ली-93

डॉ. परमेश्वर गोयल उर्फ काका बिहारी :
– डॉ. शिवनारायण, डॉ. नीलू अग्रवाल

अनुक्रम

संपादकीय

सामाजिक सरोकार के हास्य-व्यंग्य कवि –*डॉ. शिवनारायण* 07

आत्मकथ्य

मेरा जीवन मेरा साहित्य –*डॉ. परमेश्वर गोयल* 17

बातचीत

जब मैं दादा जी से मिली –*डॉ. नीलू अग्रवाल* 28

व्यक्तित्व की दिशाएँ

मेरे बाल सखा –*कमला प्रसाद सिंह 'बेखबर'* 38

डॉ. गोयल मेरे घर आये –*रघुनाथ प्रसाद विकल* 43

राष्ट्रीय चेतना के मुखर व्यंग्यकार –*देवनारायण पासवान देव* 47

मेरे 'काका बिहारी' –*डॉ. निशा प्रकाश* 59

कृतित्व की रेखाएँ

हिन्दी लघुकथा के स्वर्ण शिखर –*डॉ. सतीशराज पुष्करणा* 67

व्यंग्य धारा के राष्ट्रीय कवि –*डॉ. सुरेन्द्र नारायण यादव* 73

समकालीन संदर्भ की क्षणिकाएँ –डॉ. सिद्धेश्वर काश्यप 80

राष्ट्रीय चेतना के चितेरे –*गोपाल चंद्र घोष मंगलम्* 84

राष्ट्रवादी चिंतन की व्यंग्य कविताएँ –*रामनरेश भक्त* 95

सामाजिक चेतना के व्यंग्य –*डॉ. अशोक कुमार आलोक* 106

राष्ट्रीय चेतना के जाग्रत व्यंग्यकार –*डॉ. लव कुमार* 114

हास्य व्यंग्य के प्रतिष्ठित कवि –*डॉ. सुशांत कुमार* 127

काका बिहारी कहिन 'जो चाहे लीजिए' –*चित्तरंजन भारती* 132

राष्ट्रीय चेतना के कवि –*डॉ. सोनल* 139

आम आदमी के आक्रोश की क्षणिकाएं –*डॉ. शैलेश गुप्त 'वीर'* 143

समाज और राष्ट्र के प्रहरी	–डॉ. राहुल भागवत सदानशिव	147
व्यंग्य काव्य में राजनीति के रंग	–डॉ. अश्विनी कुमार	155
राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार	–डॉ. निरूपमा राय	158
सामाजिक चेतना का स्वरूप	–ज्ञानदीप गौतम	163
मानवोत्थान की कहानियाँ	–रजनी प्रभा	168
काका बिहारी का व्यंग्य साहित्य	–डॉ. आशा कुमारी	176
विद्रूपताओं को उजागर करता व्यंग्य	–डॉ. पंकज राय	180
डॉ. गोयल का बाल साहित्य	–डॉ. उत्तिमा केशरी	184

परिशिष्ट :

संक्षिप्त परिचय: डॉ. परमेश्वर गोयल 'काका बिहारी'	189
वंशावली	195
ग्रंथ के लेखक	196
तस्वीरें बोलती हैं	201

हास्य-व्यंग्य के प्रतिष्ठित कवि

डॉ. मृशांत कुमार

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखा है "व्यंग्य वह है, जहाँ कहनेवाला अधरोष्ठों में हँस रहा हो और सुननेवाला तिलमिला उठा हो।" व्यंग्य जड़ एवं शक्तिशाली व्यवस्था से लड़ने का माध्यम है। व्यंग्य में प्रतिरोध, संघर्ष, विवशता एवं करुणा का भाव समाहित होता है। शक्तिशाली परन्तु जड़ शक्तियों की हास्यास्पद हरकतों का उद्‌घाटन व्यंग्य के माध्यम से ही संभव हो पाता है। सत्ता, धर्म, विश्वास जब अर्थहीन और तर्कहीन होकर मनुष्य की सहज प्रकृति को बाधित करते हैं तब वे मनुष्य विरोधी होने के साथ-साथ हास्यास्पद भी हो जाते हैं। वस्तुतः व्यंग्य की मूल चेतना जड़ता के भीतर निहित हास्यास्पदता का उद्‌घाटन है। आक्रमकता, गहरी मानवीय करुणा एवं विडम्बनाबोध व्यंग्य के उत्प्रेरक हैं, इसलिए व्यंग्य अर्थहीन उपस्थितियों को अपने प्रश्नों के माध्यम से अथवा अपनी व्यंजना से ध्वस्त करता है। सार स्वरूप यह कहा जा सकता है कि व्यंग्य जीवन की विद्रूपताओं के खिलाफ औचित्य एवं मानवीय मूल्यों की पक्षधरता है।

डॉ. परमेश्वर गोयल हास्य-व्यंग्य के प्रतिष्ठित कवि है। 'भागीरथी' नामक पत्रिका का संपादन करने के साथ-साथ लघुकथा, कहानी, यात्रावृत्त आदि विधाओं में उन्होंने साहित्य-सृजन किया है। परन्तु हास्य-व्यंग्य उनकी लेखन की मूल प्रवृत्ति है। डॉ. गोयल हास्यपरक कविताओं में शिष्टता का साथ कभी नहीं छोड़ते है, ठीक उसी प्रकार व्यंग्य में शालीनता का साथ निभाते चलते हैं। डॉ. गोयल व्यंग्य का प्रयोग अपराजेय जड़ताओं के विरुद्ध अस्त्र के रूप में करते हैं। वर्तमान राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त विद्रूपताओं, विसंगतियों पर कड़ा प्रहार करते हैं। वे सीधे मर्म पर चोट करते हैं व्यंग्य के माध्यम से। इस व्यंग्य में एक आततायी व्यवस्था पर हँसने का भाव भी है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

'जहाँ रोगी पीला, डॉक्टर लाल है
समझो वही सरकारी अस्पताल है।'

आज देश में विभिन्न माध्यमों से आजादी की बात सुनने को मिल रही है। आजाद भारत में आजादी की बात अटपटी तो अवश्य लगती है, लेकिन वास्तविकता यह है कि आमजन अनेक तरह से आज भी परतंत्र हैं। राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय संविधान की उद्देशिका में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक तीन प्रकार के न्याय प्रदान करने की व्यवस्था तो की गई है लेकिन जड़ सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था ने जनता के पैरों को जकड़ रखा है। डॉ. गोयल अपने व्यंग्य के माध्यम से इस आजादी पर तंज कसते हैं। यह व्यंग्य बहुत तीखा है। स्वतंत्रता को बाधित करने वालों के लिए कड़े शब्द 'जल्लाद' का प्रयोग किया गया है, परन्तु व्यंग्य मारक क्षमता युक्त है।

'सब ओर घेरकर खड़े जल्लाद हैं,
फिर भी कहना पड़ता है, हम आजाद हैं।'

डॉ. परमेश्वर गोयल की भाषा में बिना कुछ कहे भी बहुत कुछ कह देने एवं बिना मारे ही प्राण ले लेने का अमोध शक्ति वाला तेवर है। उनका व्यंग्य भीतर तक उतर जाता है। उनकी व्यंग्य रचनाओं में बिना किसी क्रोध और गुस्से की मदद से सहज ढंग से चोट करने की प्रवृत्ति दिखती है। उनकी व्यंग्य-रचना उद्देश्यपूर्ण होती है। मानव ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति द्वारा बनाई गई व्यवस्था को दमघोंटू बना दिया है। भौतिक सुख-सुविधाओं के लालच में मानव ने प्रकृति को भारी नुकसान पहुँचाया है। उसकी नियामक बनने की लिप्सा ने प्रकृति को ही संकट में डाल दिया है। डॉ. गोयल जीवन को संकट रहित आनंदमय देखना चाहते हैं और उसे दुःखी करने वाले कारणों पर प्रहार करते हैं। वे मानव को पशु-पक्षियों से भी स्तरहीन एवं निम्न मानते हैं। स्थिति यह है कि वे अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से पशु पक्षी को भी मानव से दूर रहने पर विवश पाते हैं। एक उदाहरण से इसे समझा जा सकता है-

'चिड़िया चिड़े से बोली-
जंगल से मन ऊब गया है,
चलो, किसी गाँव
या शहर चलते हैं,

चिड़ा बोला–नहीं–नहीं
वहाँ आदमी रहते हैं।'

मानवीय मूल्यों में गिरावट एवं अवहेलना देखकर डॉ. गोयल व्यथित हैं, क्षुब्ध हैं। समकालीन राजनीतिक व्यवस्था में मूल्यहीनता बढ़ती जा रही है। झूठ, झांसा की दुष्प्रवृत्तियाँ निरंतर बलवती होती जा रही है। राजनीति में मूल्यहीनता इस कदर बढ़ गई है कि गाँधी के नाम पर राजनीति करने वाले भी गाँधीवादी मूल्यों के विपरीत आचरण करते हैं। इन सभी कारणों से डॉ. गोयल समकालीन राजनीति पर तीखा व्यंग्य करते हैं। वे लिखते हैं–

'एक बात पूछूं
बतलाओगे?
नाम गाँधी का
कितने दिन खाओगे?'

समकालीन राजनीति की खबर लेती उनकी व्यंग्य-क्षणिका 'वर्तमान राजनीति' में भी संपूर्ण राजनीतिक परिदृश्य को उजागर करने में सफल है।

'वर्तमान/राजनीति का/दिवाला,
गूंगे ने/बहरे से कहा-
अंधे को/सिनेमा दिखा ला।'

राजनीति ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। इसलिए वर्तमान का व्यवस्था हेतु राजनीति मुख्य रूप से जिम्मेदार है। राजनीति से 'विश्वास' नामक मूल्य का लोप होना वस्तुत: जनता एवं जनतंत्र दोनों के लिए घातक है। जनता का 'विश्वास' जनप्रतिनिधियों पर और जनप्रतिनिधियों का जनता पर विश्वास नहीं होना, लोकतंत्र के लिए अत्यंत घातक होता जा रहा है। 'विश्वासहीनता' ही समकालीन राजनीति का मूल्य बन गया है। इस विश्वासहीनता या 'विश्वसनीयता के संकट' को डॉ. परमेश्वर गोयल व्यंग्य-क्षणिका 'विश्वास' के माध्यम से तीखी चोट करते हैं। वे लिखते हैं--

'विश्वास/लोगों पे/झटपट करते हो,
राजनीति/क्या तुम/खाक करते हो?'

'भ्रष्टाचार' वर्तमान व्यवस्था को घुन की भाँति खा रहा है। मूल्यहीन राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों एवं पूँजीपतियों के गैर नैतिक, अपवित्र गठबंधन ने भ्रष्टाचार को व्यवस्था का अनिवार्य अंग बना दिया है। डॉ. गोयल भ्रष्टाचार

पर हमला करते हैं। अपनी व्यंग्य-क्षणिका का सुंदर समायोजन इस व्यवस्था की कलई को खोलने के लिए करते हैं। जब तक भ्रष्टाचार के वाहकों की खोज खबर नहीं ली जाएगी तब तक संपूर्ण कलुषित व्यवस्था को निर्मल बनाने की दिशा में नहीं बढ़ा जा सकता है। भ्रष्टाचार को उजागर करती हुई उनकी व्यंग्य-क्षणिका इसका स्पष्ट उदाहरण है–

'बाबू/कार्यालय से/बार-बार बाहर
काहे को जाते हैं?/वे/ अपने ग्राहकों से
मिलकर आते हैं।'

इस अन्यायपूर्ण व्यवस्था में जो लिप्त नहीं है, सहभागी बनने को तैयार नहीं है अर्थात् ईमानदारी के पथ पर चलना चाहता है, उसके लिए यह समय सबसे कठिन है। सबसे अधिक दिक्कतें उसी को है। व्यवस्था का अंग नहीं बनना स्वयं को परेशानियों में डालने जैसा है। इसलिए नेक नियती वाले, ईमानदार व्यक्ति एवं पक्के उसूलों वालों के समक्ष धर्मसंकट उत्पन्न हो गया है। सच्चे मार्ग पर चलने के कारण उन्हें उसकी कीमत चुकानी पड़ रही है। उसकी 'सजा' उन्हें भुगतनी पड़ रही है–

'जो सच्चे/ईमानदार/उसूल के पक्के हैं,
लग रहे उनको/आज/अब धक्के हैं।'

डॉ. परमेश्वर गोयल सिर्फ व्यवस्था की खामियों को गिनाते नहीं है। व्यंग्य-रचना के माध्यम से ही उसके समाधान के लिए भी मार्ग सुझाते हैं। रचनाकार व्यवस्था की कमियों को गिनाने के साथ-साथ समाधान के लिए भी व्यंग्य-क्षणिका विनियोजित करता है। जनता में निहित शक्ति को जागृत करते हुए साहस के साथ अन्यायियों का विरोध करने की भावना समाहित करते हुए वे लिखते हैं–

'अपनी शक्ति का
फाटक खोल/चुप क्यों हो?
सरेआम बोल/धूर्त धोखेबाजों से
क्यों डरता है?/चोट क्या कभी
जंजीर सहता है।'

डॉ. परमेश्वर गोयल मूलतः व्यंग्यकार हैं। उनकी व्यंग्य-रचनाएँ सामाजिक, राजनीतिक, व्यवस्था, दहेज, शराब, चुनाव, शिक्षा एवं साहित्य, उत्सव, आदि

पर केंद्रित है। राजनीति, भ्रष्टाचार, अन्याय उनके लिए पसंदीदा विषय है। व्यंग्य-रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को उजागर करना उनका मुख्य उद्देश्य है। उनकी रचनाएँ सोद्देश्य है। उनकी विशेषता व्यंग्य-क्षणिकाओं की रचना में परिलक्षित होती हैं। उनकी व्यंग्य-क्षणिकाएं समकालीन परिस्थितियों पर करारी चोट करती है। उनकी भाषा प्रतिपक्ष में आक्रोश एवं क्रोध पैदा नहीं करती है, बल्कि विरोधियों को निरूत्तर कर देती है। डॉ. गोयल दम्भी नहीं हैं, अगर कहीं दम्भ जैसा लगता भी है तो वो है उनका अखण्ड विश्वास। उनकी उक्तियाँ बेधने वाली एवं व्यंग्य चोट करने वाला है। उनकी व्यंग्य रचना आज के समाज के लिए अत्यंत ही प्रासंगिक है। ❑